2019-20

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 Impact Factor - 7.139 Indexed (SJIF)

March 2020 Special Issue – 28, Vol. 7

Relevance of Mahatma Gandhi in Today's World

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editors
Guide
Dr. B. G. Gaikwad
Principal
Shivaji College, Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2319-86948
Multidisciplinary International Research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Relevance of Mahatma Gandhi in Today's World

March 2020 Special Issue – 28, Vol. 7

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editors
Guide
Dr. B. G. Gaikwad
Principal
Shivaji College, Hingoli (MS)

Editor
Dr. Balasaheb S. Kshirsagar
Director , Gandhian Studyies Center
Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor
Dr. Wagh S.G.
Dept. of Hindi
Shivaji College, Hingoli (MS)

Shaurya Publication, Latur

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal | ISSN- 2[illegible]
Impact Factor - (SJIF) – 7. 139 | Special Issue -28 , Vol. 7 | March 2020 | Peer Reviewed

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

Index

1. 21 वी सदी में गांधी विचारधारा की प्रासंगिकता — 1
डॉ. मुकेश वसावा
2. गाँधीजी के सामाजिक न्याय की परिकल्पना — 4
प्रा.डॉ.संजय गणपती भालेराव
3. म.मांधीजी के सत्य और अहिंसा संबंधी विचार — 7
प्रा.डॉ.रमेश वि.मोरे
4. हिंदी साहित्य और गाँधीवाद — 9
डॉ.पंडित बन्ने
5. महात्मा गांधीजी के आर्थिक एवं विभिन्न विचारोंके दर्शन — 12
श्रीमती प्रा. डॉ. जाधव मिनाश्री भास्कर
6. **महात्मा गांधी की आत्मकथा "सत्य के प्रयोग" में विद्यार्थी जीवन** — 15
प्रा. डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
7. **महात्मा गांधी की सहिष्णुता** — 17
डॉ. शंकर रामभाऊ पजई
8. **माहात्मा गांधीजी के आर्थिक और सामाजीक विचार** — 19
वाळवंटे राजकुमार अर्जुन
9. युग पुरूष महात्मा गांधी और स्वतंत्रता आंदोलन (बापू एकांकी के विशेष संदर्भ में) — 22
डॉ. व्हत्ते धीरज जनार्धन
10. **गांधीवाद के राजनीतिक आयाम** — 24
प्रा. अतुल नारायण खोटे
11. महात्मा गांधीजी की ग्राम स्वराज्य की अवधारणा कि ग्रामिण विकास में भुमिका — 27
विकास वसराम आडे , तुकाराम व्ही. आडे
12. **गांधीवाद एक चर्चा** — 31
डॉ.मा.ना.गायकवाड
13. गांधीवाद और नई रोशनी — 34
माधवराव गजाननराव जोशी
14. महात्मा गांधीजी की पंचायत राज अवधारणा, संवैधानिक स्थिती एवं आज — 38
प्रा.डॉ. डि.ए. पाईकराव , प्रा.डॉ. एस.एम. आकाशे
[redacted] गांधी और राष्ट्रीय एकात्मता — 41
[redacted]
16. महात्मा गांधीजी के आर्थिक एवं विभिन्न विचारोंके दर्शन — 45
श्रीमती प्रा. डॉ. जाधव मिनाश्री भास्कर

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 28 , Vol. 7 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
March 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

महात्मा गांधी और राष्ट्रीय एकात्मता

प्रा. सुनिल एस. कांबळे
हिन्दी विभाग
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली

प्रष्ठभुमि

भारत के आधुनिक इतिहास में और स्वतंत्र भारत के उन्नति एवं योगदान में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का नाम प्रमुख है | महात्मा गांधीजीने सत्य, अहिंसा, स्वालंबन और मनुष्यमात्र की आजादी पर आधारित भारत का जन-जीवन निर्धारित किया | देश एवं मानवता का निर्वाह हो, यह उनका सपना था | भारत माता और मानवता के लिए सबकुछ न्योछावर किया | गांधीजी के विचारों का बहुत बडा प्रभाव भारत के मानस पर पडा है | सामाजिक समता, समरसता एवं राष्ट्रीय एकात्मता बनाएं रखने का काफी प्रयास उन्होने किया है | भारतीय इतिहास में सत्य, अहिंसा और त्याग का वहन करने वाले गांधीजी श्रेष्ठा पुजारी थे | उनकी त्यागभावना, दृढता, सत्य, और अहिंसा वादी विचारधारा उनका श्रेष्ठत्व सिद्ध करती है | सौहार्द्र और मानवता से भरा आदर्श व्यक्तिमत्व सर्वथा कल्याणकारी रहा है | भारतीय इतिहास मे महात्मा बुद्ध के बाद गांधीजी ही युगपुरुष के रुप में उभरे है | जिन्हे पुरा विश्व 'महात्मा' से सम्मानित करता है |

भारत वर्ष में महात्मा गांधी के निर्देशों के अनुसार संसदीय लोकतंत्र को अपनाया गया | गहन आस्था और प्रतिबद्धता के लिए विविधता में एकता का अनुठा दर्शन होता है | भारत वर्ष को आजाद करने के लिए जो आंदोलन जिन महामहिमोंने किये है | उनमें से शिर्षस्थ नाम महात्मा गांधीजी का आता है | आधुनिक भारत के शिर्षस्थ महामहिमोंने बौद्धिक सुझ-बुझ और बहुत सारे प्रयासों से भारत की विविधता और अखण्डता को बनाए रखने का सफल प्रयास किया है | भारत में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता के होते हुए भी आज महात्मा गांधी के दिए गए निर्देशकों के कारण विश्व में भारत देश अपना परचम लहरा रहा है | आजादी के ७० साल बाद भी भारत वर्ष में एकता का दर्शन होता है | विश्व आज भारतीय लोकतंत्र को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ लोकतंत्र मान रहा है | इतनी सारी प्रान्तीक, भाषा, विविध वेशभूषा, केशभूषा, धर्म, सम्प्रदाय, जातीय विविधता होते हुए भी संविधान के बलपर एक संघ राष्ट्र के रुप में आगे बढ रहा है |

महात्मा गांधीने देश को संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न और धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने का संकल्प किया था | देश के सभी धर्मों के लोगो को अपनी धार्मिक आजादी को बनाए रखने का अधिकार दिया गया | महात्मा गांधी के चिन्तन के विविध स्त्रोत है, जिनमें राष्ट्रीय एकात्मता महत्वपूर्ण है | प्रखर राष्ट्रवादी नेता, अहिंसा के पुजारी होने के कारण उन्होने राष्ट्रीय जागरण एवं देशप्रेम को सर्वस्व माना | गांधीजीने देश के सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रोंपर चिंतन की अमीट छाप छोडकर देश की आजादी और प्रगति के लिए एक निश्चित मार्ग निर्धारित किया |

उद्देश :-

1) महात्मा गंधी युग का सामाजिक परिवेश
2) महात्मा गांधी के राष्ट्रीय एकात्मता पर किये गए विचारों का अनुशिलन

ग्रहितके :-

1) महात्मा गांधी के पूर्व समाज जीवन में राष्ट्रीय एकात्म भाव का अभाव
2) महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय एकात्मता के लिए बहूमोल योगदान दिया है |

Principal
Shivaji College, Hingoli
Dist. Hingoli (MS)

संशोधन पद्धति :-

प्रस्तूत शोध आलेख में तथ्य संकलन के व्दितीय तंत्र का अवलंब किया गया है | संकलित तथ्यों के गुणात्मक आधारपर वर्गीकरण करके वर्णनात्मक पद्धति के माध्यमसे विश्लेषण किया गया है |

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 28 , Vol. 7
March 2020
Peer Reviewed
SJIF
ISSN : 2319-8648
Impact Factor : 7.139

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI

विषय प्रतिपादन :-

महात्मा गांधी का व्यक्तित्व निस्वार्थ भाव का था। उन्हे किसी भी सत्ता का लालच नही था। गांधीजी का धर्म मानवता तथा लोककल्याण की भावना से प्रेरित था। प्रमिला दाधीच के शब्दो में, "वे शासन नही बल्कि अनुशासन के समर्थक थे। उनका मानना था कि स्वप्रेरणा के कारण व्यक्ति स्वतंत्र चिंतन करता है, परिणमत: उसके कार्य भी कल्याणकारी होते है।"[1]

राष्ट्रीय एकता संबंधि वे बिलकुल सजग थे। भारत में अनेक धर्म, सम्प्रदाय, जाति, भाषा और अनेक विविधताओं में एवं परम्पराओं में लोग विश्वास करते है। इस कारण देश में भाईचारा बनाए रखने में दिक्कत आती थी। फिर भी महात्मा गांधी ने एकता को बनाए रखने के लिए जी-तोड मेहनत की है। डॉ. संगिता माथुर के शब्दों में, "गांधीजी ने एक समन्वित समाज की अनिवार्यता बल दिया जिसमें समाज के सदस्यों के हित एक हो, जिसमें की अन्याय की समाप्ति और न्याय की स्थापना हो साथ ही उन्होने साधन साध्य की पवित्रता, अहिंसा, प्रेम और भाईचारे को बढाने पर बल दिया तथा सत्याग्रह के अस्त्र को युद्ध के विकल्प के रुप में प्रस्तुत किया।"[2]

गांधीजी के मानवीय दृष्टिकोण के कारण उनका मानना था की जो भी संघर्ष है उसे शांतिपूर्ण मार्ग से ही हल किया जाए। युद्ध और हिंसा से किसी भी समस्या का बिलकुल हल नही हों सकता। उन्होने आदर्शवादी बिचारों से सत्य, अहिंसा, प्रेम, नैतिकता और सर्वोदयी मानवीय प्राथमिकताओं को लेकर समाज सुधार एवं देश हीत की अपेक्षाएँ की है। गांधीजी ने सामाजिक धार्मिक एवं राजनैतिक चुनौतियों को स्विकार कर उनका निवारण करने का दृढ संकल्प किया था। गांधीजी के इस तेजोमय एवं प्रखर व्यक्तित्व के बारे में डॉ. संगिता माथुर कहती है, "गांधीजी बेजुबानों की आवाज के रुप में उभरे, गांधीजी की प्रासंगिकता इस बात में है की आवाज के रुप में उभरे, गांधीजी की प्रासंगिकता इस बात में है कि उन्होने विश्वभर के समाज सुधारकों राजनैतिक विचारों और संघर्षशील लोगों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया।"[3]

मनुष्य में धर्म और नैतिकता का होना अत्यंत अत्यंत जरुरी होता है। धर्म और नैतिकता के बलपर ही समाज या देश एकता के सुत्र में बंधा रहता है। महात्मा गांधीजी के अनुसार भारत के हर एक आदमी को धर्म का स्वअधिकार होना चाहिए। किसी भी धर्म के व्यक्ति को पुरा स्वातंत्र्य होना चाहिए। धर्म के आधारपर किसी भी प्रकारका भेदभाव नहीं होना चाहिए। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र होना चाहिए। धर्मनिरपेक्षा के बारे में डॉ. एम. के. मिश्रा और डॉ. कमल दाधीच महात्मा गांधी के विचारों को अभिव्यक्त करते हुए कहते है, "गांधी बौद्ध धर्म के प्रति अत्यंत प्रशंसा का भाव रखते थे किन्तु वे किसी भी धर्म का राज्य धर्म बनाये जाने अथवा उसे राज्य का संरक्षण प्रदान करने के पक्ष में नही थे। वे राज्य के धर्मनिरपेक्ष स्वरुप के समर्थक थे।"[4]

भारतवर्ष के लोगोंने सद्सद्विवेक बुद्धि को जागृत रखकर धर्म का अवलंब कर भेदभाव और पाखण्ड को दूर रखना होगा। समता, स्वतंत्रता एवं बंधुता के आदर्शो को लेकर जीवनायापन करना होगा। भाईचारा बनाए रखना हर भारतियों का फर्ज होना चाहिए। डॉ. मिश्रा और डॉ. दाधीच के शब्दो में "भारत विभिन्न धर्मों का देश है। यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, बोद्ध, जैन एवं इसाई धर्मावल्बी रहते है। फिर भी भारत का कोई एक राजधर्म नहीं है। बल्कि सभी धर्मों को समान महत्व और आदर दिया जाता है। भारतीय संविधान में प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म के पालन, पुजा करने एवं प्रचार की स्वतंत्रता है।"[5]

महात्मा गांधीजी का मानना था कि प्रत्येक राष्ट्र को स्वतंत्र रहने का अधिकार है। उसके लिए बहुत सारे अहिंसात्मक आंदोलन के बलपर भारत को स्वतंत्र करने में एवं भारत को श्रेष्ठ भारत बनाने में मरते दम तक प्रयासरत रहे। सारा जीवन दाँव पर उन्होंने लगाया। राष्ट्रीय एकात्मता बनाएँ रखने के लिए प्रांतीय भाषाएँ और देशी भाषाएँ शिक्षा का माध्यम हो। देशी भाषाओं में शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। अंग्रेजी भाषा के प्रति उतना लगाव नहीं होना चाहिए। हर व्यक्ति को भाषा की आजादी होनी चाहिए। गांधीजी के अनुसार राष्ट्र के लिए एक ही राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। और वह हिन्दुस्थानी मतलब हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा हो। भारत देश को प्रगति एवं उन्नति की और ले जानेवाली क्षमता सिर्फ हिन्दी में है। लोगों को जोडने वाली भाषा हिन्दी ही है।

उन्होने हिन्दी भाषा के माध्यम से सभी भारत के लोगों को जोडने का काम किया। राष्ट्रीयता को सुदृढ बनाया। वे देश में आदर्श समाज निर्माण करना चाहते थे। उनका लक्ष राष्ट्र निर्माण एवं विश्वशांती स्थापित करना था। ज्ञानी व्यक्ति राष्ट्रहित के बारे मं सचेत हो। डॉ. मिश्रा एवं डॉ. दाधीच के अनुसार, "प्रान्तिय भाषाएँ ही जनता की राजनैतिक शिक्षा का

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

माध्यम हो सकती है, इन भाषाओं के अतिरिक्त राष्ट्रभाषा हिन्दुस्थानी का भी ज्ञान और प्रचार राष्ट्रीयता को मजबूत करने के लिए आवश्यक है | शिक्षा के अलावा छात्रों, मजदूरों, किसानों और महिलाओं को संगठित करने का सुझाव गांधीजी देते रहते थे |"[6]

महात्मा गांधी राष्ट्रहीत के लिए भारतीय संस्कृति को बनाये रखने की कोशिश करते थे | स्वदेशी वस्तुओं को अपनाओं तथा पाश्चात्य भौतिक साधनों का अवलंब न करो इसकी सिख देते थे | भारतियों ने उपरी चमक-धमक से बचना होगा | देशवासियों में देशप्रेम को कूट-कूट कर भरने का प्रयास जीवन के अंतिम पल तक किया राष्ट्रनिर्माण एवं एकात्मता बनाए रखने लिए शिक्षित होना जरुरी है | शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य जीवन का संपूर्ण विकास होगा अंत: साथ ही साथ देश का विकास होगा | भारत की स्वतंत्रता को लेकर महात्मा गांधी के विचार डॉ. मिश्रा और डॉ. कमल दाधीच के शब्दो में "हम यहाँ अंतराष्ट्रवाद के प्रति सशक्त प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हूए धर्मनिरपेक्ष और राष्ट्रवादी दिशा में अग्रसर होंगे, वर्तमान समय में चाहे कितनी ही भ्रांती क्यों न फैली हो | भविष्य का भारत अपने अतीत की तरह अनेक आस्थाओं वाला देश होगा जिन्हे समान आदर और सम्मान दिया जायेगा | परंतु यहाँ एक राष्ट्रीय दृष्टिकोन को स्विकार किया जायेगा |"[7]

आज आजादी के 70 साल बाद भी महात्मा गांधी के उन विचारों को देश को सही माईने में जरुरत है | आज देश सदभाव को खो चुका है | दिनोंदिन साम्प्रदायिक लोगों की तादात बढ रही है | देश टूटने के कगार पर आ चूका है | वर्तमान में धार्मिक व्देश चर्मोत्कर्ष पर पहूँच चूका है | अराजक की स्थिती बनी हूई है | भारत की धर्मनिरपेक्षता धोके में है | भारतीय संविधान की धज्जीयाँ दिन दहाडे उडा रहे है | गांधीजी के सपनों का भारत आज घायल होकर व्याकूल हो चूका है | उनका जो सपना था – स्वतंत्रता के साथ समानता स्थापित करना और मानवता धर्म का प्रसार एवं प्रचार करना वह आज की तिथी में एक कंकाल की तरह हो चूका है |

सर्वधर्म समभाव को लेकर भारत आगे बढ रहा है | लेकिन आज की तिथि में एक अवरोध आया है | गांधीजी कहते थे राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने के लिए सभी धर्मों में आपसी बंधुत्व भाव हो, जिससे स्नेह एवं आदर आ सके | लेकिन आज परिवेश बदल चुका है | राजनैतिक नेताओं के गंदे कारनामों एवं षडयंत्र के कारण भारत खोकल हो चुका है | चेहरे पे और चेहरे लगाकर नेता लोग अराजक की स्थिती बनाने में कामयाब हो रहे है | अनैतिक मार्ग का अवलंब कर धार्मिक व्देश फैला रहे है | यह गांधी विचारों के विलोभ में है |

सारांश :-

महात्मा गांधीजीने समग्र मानव जाति के उत्थान के लिए अहिंसा, सत्य और नैतिकता को बनाए रखने का संदेश दिया | गरीबी एवं जातिय व्यवस्था को देखते हूए शोषण मुक्त भारत का सपना देखा | राष्ट्रीय एकात्मता दृढ करने के लिए अपनत्व एवं बंधुता को भाव रखे | साम्प्रदायिकता, संकिर्णता एवं धर्मान्धता को त्यागकर समन्वय बनाए एवं मानवतावादी धर्म या विश्वबंधुत्व की और अग्रेसर हो |

संदर्भ सुचि :-

1) प्रमिला दाधीच – महात्मा गांधी एवं डॉ. बी. आर. आंबेडकर, रिडर रेफ्रेन्सेस, आग्रा - पृष्ठ क्र. 116
2) डॉ. संगिता माथुर – गांधी दर्शन उद्योगवाद एवं संस्कृति, न्यू मॅन पब्लीकेशन, परभणी - पृष्ठ क्र. 104.
3) डॉ. संगिता माथुर – गांधी दर्शन उद्योगवाद एवं संस्कृति, न्यू मॅन पब्लीकेशन, परभणी - पृष्ठ क्र. 104.
4) डॉ. एम. के. मिश्रा और डॉ. कमल दाधीच – महात्मा गांधी विश्वकोश, अर्जुन पब्लीसिंग हाऊस, नई दिल्ली – पृष्ठ क्रं. 73
5) डॉ. एम. के. मिश्रा और डॉ. कमल दाधीच – महात्मा गांधी विश्वकोश, अर्जुन पब्लीसिंग हाऊस, नई दिल्ली – पृष्ठ क्रं. 74
6) डॉ. एम. के. मिश्रा और डॉ. कमल दाधीच – महात्मा गांधी विश्वकोश, अर्जुन पब्लीसिंग हाऊस, नई दिल्ली – पृष्ठ क्रं. 03
7) डॉ. एम. के. मिश्रा और डॉ. कमल दाधीच – महात्मा गांधी विश्वकोश, अर्जुन पब्लीसिंग हाऊस, नई दिल्ली – पृष्ठ क्रं. 09

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)